पद २९३ (राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी) निर्गुण सगुण मी गायीना। मी म्हणणें मज साहिना।।धु.।। कानाविण मज एकणें। डोळ्याविण रूप देखणें। जिह्वेविण रस चाखणें। घ्राणाविण परिमळ घेणें।।१।। पायाविण नीट चालतों।

वाचेविण स्पष्ट बोलतों। त्वचेविण सुख-दु:ख सोशितों। इंद्रियाविण भोग भोगितों।।२।। नामाविण मज माणिक नाम। कामाविण मज सर्विह काम। धामाविण मज मंगल धाम। आकाराविण मजला सव्य वाम।।३।।